प्रातः क्लास ओमशान्ति 13-8-67

रिकार्ड:- महफिल में जल उठी शमा:- ओमशान्ति। मीठे2 नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार चैतन्य परवानों को बाबा याद प्यार दे रहे हैं। तुम सब हो चैतन्य परवाने। बाप को शमा भी कहते हैं पर जानते बिल्कुल ही नहीं हैं। शमा कोई बड़ी नहीं एक बिन्दी है। किसकी भी बुधि में होगा कि बाबा आत्मा बिन्दी है। हमारी आत्मा में सारा पार्ट है। आत्मा और परमात्मा का नालेज और किसी की बुधि में नहीं है। तुम बच्चों को ही बाप ने आकर समझाया है। आत्मा का रियलाईजेशन दिया। आगे यह पता नहीं था कि आत्मा क्या है, परमात्मा क्या है। न आत्मा, न परमात्मा को समझा तो गोया हु बहु जनावर मिसल ठहरे। बन्दर से भी बदतर कहा जाता है। बच्चों में मोह भी है, विकार भी है। भारत कितना ऊंच था विकार का नाम भी नहीं था। वह था वायसलेस भारत। अभी है विसस भारत। कोई भी मनुष्य ऐसे नहीं कहेंगे जैसे बाप समझाते हैं। आज से 5000 वर्ष पहले हमने इनको शिवालय बनाया था। मैं ने ही शिवालय स्थापन किया था। कैसे वह भी तुम समझ रहे हो। बच्चों का भी विचार सागर मथन चल रहा है ना। बाम्बे वालों ने सेमिनार का प्रोग्राम बनाया है तो जो भी अच्छे बच्चे हैं सभी ने पायन्टस निकाली हैं। सब बच्चों का विचार सागर मथन चलता रहता है। हम भी पायन्टस निकाल भेजें। तो हमारा भी हुनर देखें। यह जो पत्थर मारा जाता है। जो एक दम सोये पड़े थे वह जाग कर विचार सागर मथन करने लगे। यह भी अच्छा हुआ। बहुतों को जगाना। कदम2 पर जो होता है वह कल्याणकारी है। ऐक दिन जास्ती कल्याणकारी उनका है जो बाप को अच्छी रीत याद कर अपना भी कल्याण करते रहते हैं। यह है ही कल्याण करने का पुरुषोत्तम संगम। बाप की कितनी महिमा है। उनके आगे साधु सन्त क्या हैं। कुछ भी नहीं। शंकराचार्य जो सबसे बड़ा उनको भी देखा शिव की पूजा करते हैं। तो पुजारी ठहरा ना। इस समय बड़े ते बड़े जो हैं यह राम मूर्ति एक ... अपना पूजा करते हैं। इस पर कथा भी है सब अभी की बातें हैं। सब अभी चल रहा ना। बाप ने किसके लिए कहा था वह अभी तुम समझते हो। खुद शिव की पूजा करते रहते हैं। जो तुम सब करते थे। तुम हीरे के लिंग बनाये पूजा करते थे। अभी तुमको स्मृति आई है। हम जब पुजारी बने थे तब मंदिर बनाये थे। हीरे माणिक का बनाते थे। वह चीज तो अभी मिल न सके। यहाँ तो चांदी आद का बनाये पूजा करते हैं। ऐसी पूजारियों का भी मान देखो कितना है। शिव की पूजा तो सब करते हैं। मेहतर भी करते हैं। वेश्यायें भी करती हैं। वह अव्यभिचारी पूजा तो है नहीं। शंकराचार्य ने भी पूजा की, वेश्याओं ने भी पूजा करती तो फर्क क्या रहा। भले संस्कृत पढ़े हैं, शास्त्रवाद करते हैं बैठ कर। रिजल्ट कोई नहीं। जैसे डेबरों की राउन्ड टेबल कान्फ्रेंस हो जाती है। यह भी बच्चे जानते हैं भारत की हालत क्या है। यह राज्य मिला है। सिर्फ दिलासा देते रहते हैं। पेन्शन भी आने का है जब। तैयारी हो रही है। नेचरल कैलेमिटीज़ भी ड्रामा में नूंध है। कोई कितना भी माथा मारे तुम्हारी राजाई तो स्थापन होनी ही है। कोई की ताकत नहीं जो इसमें कुछ कर सके। बाकि अवस्थायें उपर नीचे होंगी ही। यह है बहुत बड़ी कमाई। कभी तुम बहुत खुशी में, अच्छी ख्यालात में रहेंगे। कब ठन्डे पड़ जावेंगे। यात्रा में भी नीचे उपर होते हैं। इसमें भी ऐसे होता है। कब तो सुबह को उठ बाप को याद करने से बहुत खुशी होती है। वो ही बाबा हमको पढ़ाये रहे हैं। वन्डर है। सभी आत्माओं का बाप भगवान हमको पढ़ाये रहे हैं। उन्हों ने फिर कृष्ण को भगवान समझ लिया है। सारी दुनिया में गीता मान बहुत है। क्योंकि भगवानुवाच है ना। परन्तु यह किसको पता नहीं है कि भगवान किसको कहा जाता है। भल कितने भी पोजिशन वाले बड़े2 विद्वान पंडित आद हैं। बिल्कुल ही वर्थ नाट अ पेनी है। कहते हैं गाड फादर। उनको याद करते हैं परन्तु वह कब आया क्या आये कि था वह सब भूल गये हैं। बाप सभी बातें समझाते रहते हैं। ड्रामा में यह सब नूंध है। यह रावण राज्य भी फिर होगा। और हमको आना पड़ेगा। रावण ही तुमको घोर अज्ञान नींद में सुलाये देते हैं। भक्ति को कहा ही जाता है अज्ञान। ज्ञान तो जरूर ऐक ज्ञान सागर ही बतलाते हैं। जिस से सदगति होती है। सिवाये बाप के और कोई सदगति कर न सके। सर्व की सदगति दाता एक है। गीता का ज्ञान जो बाप ने

सुनाया था वह प्रायः लोप हो गया। ऐसे नहीं कि यह ज्ञान कोई परम्परा से चला आता है। और कुरान, बाईबल आद चले आते हैं। विनाश नहीं हो जाती। तुमको तो जो ज्ञान मैं देता हूँ उनको कोई शास्त्र नहीं बनता है। परम्परा अनादी हो जाये। यह तो तुम जो लिखते हो पिरडिसट्राय कर देते हो। यह तो सब नैचरली जल कर खतम हो जावेंगे। बाप ने कल्प पहले भी कहा था। अभी भी तुमको कह रहे हैं। यह ज्ञान अभी तुमको मिलता है। फिर प्रालब्ध जाये पाते हो। फिर इस ज्ञान की दरकार नहीं रहती। भक्ति मार्ग में सब के शास्त्र है। तुमको कोई बाप गीता पढ़ कर नहीं सुनाते हैं। बाप तो राजयोग की शिक्षा देते हैं। इसवक्त फिर भक्ति मार्ग में शास्त्र बनाते हैं। तो अग्रम बग्रम कर देते हैं। तो तुम्हारी भूल बात है गीता का ज्ञान किसने दिया। उनका नाम बदली कर किया है। और कोई भी नाम बदली नहीं हुआ है सब की मुख्य धर्मशास्त्र है ना। इसमें मुख्य है डिटिज्म, इसलाम, बुधिज्म। भल कोई कहते हैं कि पहले बुधिज्म है। पीछे इस्लामिज्म। वोलो इन बातों से कोई ज्ञान का तैलक नहीं है। हमारा तो काम है बाप से वर्सा लेने का। बाप कितना अच्छी रीत समझाते हैं। यह झाड़ बड़ा अच्छा है। जैसे फलावर वाज़ है। 3 ट्युवस निकलती है। कितना अच्छा समझ से बनाया हुआ झाड़ है। कोई भी झट समझ जावेंगे कि हम किस धर्म के हैं। हमारा धर्म किसने स्थापन किया। यह दयानन्द, अरविन्दो घोष आद तो अभी होकर गये हैं। बाबा की लाईफ की बात है। बाबा ने यह भी कहा है वह लोग क्या2 समझाते हैं इसकी भी जाँच करो। अनेक प्रकार की वह लोग योग सिखाते हैं। है सब भक्ति। ज्ञान का तो नाम निशान नहीं। कितनी बड़ी2 टाईटल भी रखते हैं। डाक्टर आफ फिलासफी। वह बहुत शास्त्र पढ़े हुए होते हैं। उनको यह टाईटल मिलता है। यह भी सब ड्रामा में नूँध है। फिर भी होगा 5000 वर्ष बाद। शुरू से लेकर चक्र कैसे चला है, फिर कैसे रिपीट होता है तुम यह जानते हो। अभी प्रजेन्ट फिर पास्ट हो फ्युचर होगा। पास्ट परजेन्ट, फ्युचर। जो पास्ट हो जाता है वह फिर फ्युचर होता है। इस समय तुमको नालेज मिलती है। पास्ट परजेन्ट फ्युचर किसको कहा जाता है यह भी कोई समझते नहीं। जो पास्ट हो गया है वह फिर तुमको परजेन्ट में समझाते हैं। फिर तुम राजाई लेते हो। इन देवताओं का राज्य था ना। उस समय और कोई का राज्य नहीं था। यह भी एक कहानी मिसल बनाओ। बड़ी सुन्दर कहानी बन जावेंगे। लोग2 5000 वर्ष पहले यह भारत सतयुग था। कोई धर्म न था। सिर्फ दैवी देवताओं का ही राज्य था। इनको सूर्यवंशी राज्य कहा जाता था। सूर्यवंशी लक्ष्मी नारायण का राज्य चला 1250 वर्ष। फिर उन्हों ने राज्य दिया दूसरे भाईयों क्षत्रियों का। फिर उनका राज्य चला। बाप ने आये पढ़ाया था। जो अच्छी रीत पढ़े वह सूर्यवंशी बने। जो फेल हुये उनका नाम क्षत्री पड़ा। बाकि लड़ाई आद की बात नहीं है। बाप ने तो कहा है मुझे याद करो तुम्हारे विकर्म विनाश हो जावेंगे। विकारों पर जीत पानी है। बाप ने यह आर्डिनेन्स निकाला है। जो काम पर जीत पहनेंगे वह ही जगत जीत बनेंगे। पीछे आधा कल्प बाद फिर वाम मार्ग में गिरते है। वहां की चित्र भी है। सिक्ल भी देवताओं की बनी हुई है। देवतायें वाम मार्ग में कैसे गये उनके चित्र है। राम राज्य और रावण राज्य आधा2 है। उनकी कहानी ठीक बनानी चाहिए। फिर क्या हुआ, फिर क्या हुआ। यह है हो सत्य नारायण की कहानी। बाकि वह सब है झूठी। सत्य ट्रुथ तो एक ही बाप है। जो इस समय आकर तारी आद, मध्य, अन्त, पास्ट परजेन्ट, फ्युचर का तुमको नालेज दे रहे है। वह और कोई दे नसकते। ऋषि मुनि आद जिनको इतना मान देते है वह भी कहते थे नेती2। हम रचता और रचना की आद मध्य अंत को नहीं जानते। तो नास्तक ठहरे ना! होर मनुष्य मात्र सिवाए तुम्हारे सब नास्तक हैं। बाप को ही नहीं जानते। खुद ही कहते है हम नहीं जानते तो नास्तक ठहरे। खुद ही आन के ईडियट सिध करते है। जब ड्रामा में एक्टर हैं उनकी क्रियेटर, डाईरेक्टर आद को नहीं जानते तो बाकि कौन जानेगे। अभी तुमको बाप बैठ बताते है। जब कि वे खुद ही कहते हैं हम नास्तक हैं तो क्यों न समझा जाये कि जनावर मिसल हैं।

सुरत मनुष्य की है, सिरत जनावर की है। ड्रामा अनुसार भी ऐसे होगा। बाप आकरतुम बच्चों फिर पढ़ावेंगे। यहां दूसरा कोई आये न सके। बाप कहते हैं मैं बच्चों को ही पढ़ाता हूं। ईडियट को यहां बिठाये न सके। इन्द्र परस्त की कहानी भी है ना। निलम परी पुखराजपुरी नाम है ना। तुम्हारे में भी कोई तो हीरे जेसा रत्न है। देखो रमेश ने ऐसी बात निकाली जो सभी कितना विचार सागर मथन हुआ। तो हीरे जैसा काम किया ना। कोई पुखराज है कोई क्या है। कोई तो बिलकुल कुछ नहीं जानते। यह भी जानते हैं राजधानी स्थापन होती है। उसमें राजाऐं रानीयां आद सब चाहिए। तुम समझते हो हम ब्राह्मण श्रीमत पर पढ़ कर विश्व का मालिक बनते हैं। कितनी खुशी होनी चाहिए। यह मृत्युलोक खतम होना है। यह बाबा तो अभी हे समझते रहते हैंहम जाये बच्चा बनेंगे। बचपन को वह बाते अभी ही सामने आ रही हैं। चलन ही बदल जाती है। ऐसे हो वहां जब बूढे होंगेतो समझेंगे यह बुढ़ापा छोड़ हम किशोर अवस्था में चले जावेंगे। बचपन है सतोप्रधान अवस्था। यह तो युवा है। शादी किये हुए को किशोर अवस्था थोड़े ही कहेंगे। युवा को रजो, बुढ़ापे को तमो कहते हैं। इसलिए कृष्ण पर लव जास्ती रहती है। है तो लक्ष्मी नारायण वह ही। परन्तु यह जानते नहीं हैं, कृष्ण को द्वापर में, लक्ष्मी नारायण को सतयुग में ले गये हैं। अभी तुम बच्चे समझते हो सौ परसेन्ट ईडियट है। अभी तुम देवता बनने पुरूषार्थ कर रहे हो। बाप कहते रहते हैं कुमारियों को खड़ा होना चाहिए। कुमारी कन्या, अधर कुमारी की मंदिर भी है ना। जैनी लोग जिन्हों ने यह दिलवाला मंदिर बनाई हैउन्हों को थोड़े ही पता हैकि यह नाम क्यों रखा है। अभी तुम समझते हो यह तो हमारा एक्युरेट यादगार है। वह जड़, यह है चैतन्य। अभीतुमको हंसी आती है। हम किसके पास जाते हैं। हम यहां चैतन्य बैठे हैं। हम भारत को स्वर्ग बनायेरहे हैं। स्वर्ग तो यहां ही होगा। कोई छत में थोड़े ही रखा है। मूल वतन, सूक्ष्म वतन कहां हैंतुम बच्चों को सब मालूम है। सारे ड्रामा को तुम जानते हो। जो पास्ट हो गया है वह फिर फ्युचर होगा। फिर पास्ट होगा। तुमको कौन पढ़ाते हैं, यह समझना है कि हमको भगवान पढ़ाते हैं। बस, ठंढी ठार हो जाना चाहिए खुशी में। बाप की याद से सब घोटाले निकल जाते हैं। बाबा हमारा बाबा भी हैहमको पढ़ाते भी हैं। फिर हमको साथ भी ले जावेंगे। अपन को आत्मा समझ परमात्मा बाप से ऐसी बाते करनी चाहिए। बाबा अभी हमको मालूम पड़ा है। ब्रह्मा और विष्णु का भी अभी मालूम पड़ा है। विष्णु के नाभी से ब्रह्मा निकला तो फिर ब्रह्मा के नाभी से विष्णु निकलना चाहिए। इस चित्र का भी कितना अच्छा ज्ञान है। विष्णु के नाभी से ब्रह्मा निकला। अब विष्णु दिखाते हैं क्षीर सागर में। ब्रह्मा को सूक्ष्म वतन मेंदिखाते हैं। वास्तव में है यहां। विष्णु तो हुआ राज्य करने वाला। अगर विष्णु से ब्रह्मा निकला तो जब राज्य भी करेंगे। विष्णु के नाभी से निकला जैसे कि बच्चा हो गया। यह सब बाते बाप बैठ समझाते हैं। ब्राह्मण ही 84 जन्म पूरे कर अब फिर विष्णुपुरी के मालिक बनते हैं। यह बाते भी पुरी रीत समझते नहीं। वह खुशी का पारा नहीं चढ़ता। गोप-गोपियां तो तुम हो। सतयुग में थोड़े हो होंगे। वहां तो होंगे प्रिन्स-प्रिन्सेज। गोप गोपियों का बापगोपी वल्लभ तो बाप हुआ ना। प्रजा पिता ब्रह्मा हुआ सब का बाप। और सभी आत्माओं का बाप है निराकार शिव। यह सब है मुख वंशावली। तुम सब ब्रह्मा कुमार कुमारियां भाई-बहन हो गये। क्रिमनल आए हो न सके। इसमें ही माया हार खिलाती है। इन गुंओं आद की जंजीरों से अब तुमको अच्छी रीत छुड़ाना है। बाप कहते हैं यह भक्ति मार्ग शास्त्र आद जो कुछ पढ़े हो वह भूल जाओ। मैं जो सुनाता हूं वह पढ़ो। सीढ़ी बड़ी फर्स्ट क्लास है। कोई भी बात में डरना न है। भल केस करे। सारा मदार है एक बात पर। गीता का भगवान कौन? कृष्ण को तो भगवान कह नहीं सकते। वह तो पूरे 84 जन्म लेने वाला है। उनका नाम गीता में दे दिया है। सांवरा भी उनको बनाया है। फिर लक्ष्मी नारायण को भी सांवरा कर दिया है। कोईहिसाब किताब ही नहीं। राम चन्द्र को भी काला कर देते। लव

कहते हैं काम चिता पर बैठने से सांवरा हुआ है। नाम करके एक का लिया जाता है। तुम सब ब्राह्मण अभी ज्ञान चिता पर बैठे हो। शूद्र काम चिता पर हैं। अभी तुम ज्ञान चिता पर बैठे हो गोरा बनने। बाप कहते हैं विचार सागर मंथन कर युक्तियां निकालो कैसे जगावें। जगे भी ड्रामा अनुसार। ड्रामा बड़ा धीरे2 चलता है। विचार करना है कैसे जोड़ से बाम्ब मारें। मुख्य बात है गीता का भगवान कौन। भगवान को कितनी गालियां दी हैं। बाप आकर भारत को स्वर्ग बनाते हैं। उनको बैठ इतनी गाली दी है। भारतवासियों ने अपने को चमाट लगाई है जो बिलकुल ही पत्थर बुद्धि बन गये हैं। फिर पारस बुद्धि तो बाप ही बनावेंगे। तो मुख्य बात है गीता की भगवान की। गीता भी बहुत अच्छी सोनेहरी बनाओ। भल कितना भी खर्चा हो। अच्छे ते अच्छा आर्टिस्ट लो। बाम्बे में अच्छे2 आर्टिस्ट हैं। सबसे होशियार श्रीनाथ द्वारे में होते हैं। तो गीता सुनहरी हो जिस पर हीरे जड़े हों। एक गीता पर कृष्ण हो। और दूसरे पर शिव बाबा। यह ज्ञान सागर निराकार, वह तो साकार हो गया। शिव भगवानुवाच लिखा हुआ हुआ हो। क्यों जज करो गीता का भगवान कौन? मैं ने तो कहा था ना अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो। देही अभिमानी भव। आत्मा का ज्ञान अभी तुम बच्चों को मिल रहा है। तो ऐसे2 चित्र बनाओ सर्विस करो तो तुम्हारी प्रजा बहुत बनती जावेगी। जेल से छूटते जावेंगे। ड्रामा भी छटा है ना। बारह गुरु किये थे। अब बाप कहते हैं इन गुरुओं को मारो गोली। तुमको कहते हैं तो हम भी सुनते हैं ना। सद्गुरू एक होता है। जो सर्व का सद्गति दाता है। बाप कहते हैं मैं दिव्य जन्म लेता हूं इन में प्रवेश करता हूं। तुम तो नहीं कहेंगे हमारे में प्रवेश किया है। इन में प्रवेश किया है। इनके लिए कहते हैं यह अपने जन्मों को नहीं जानते हैं। इनकी बात तुमको सुनाते हैं। मुझ अकेले को कैसे सुनावें। सुनने वाला तो दूसरा चाहिए ना। तो बच्चों अटेन्शन इस में देना है कि सर्विस की वृद्धि कैसे हो। ड्रामा जूं मिसल चलता रहता है। राजधानी भी ऐसे स्थापन होगी। झाड़ पर समझाना बहुत सहज है। बड़ के झाड़ का मिसाल भी है। और सभी धर्म खड़े हैं बाकि डिटिज्म है नहीं। हिन्दुइज़्म तो हो नहीं सकता। हिन्दुइज़्म तो कोई ने स्थापन तो किया ही नहीं। यह तो हिन्दुस्तान नाम से हिन्दु कह दिया है। बाप कहते हैं तुम तो आदी सनातन देवी देवता धर्म के हो। देवताओं को ही मानते हो फिर हिन्दु क्यों कहते हो। हिन्दु धर्म कब किसने स्थापन किया तुम हो ही आदी सनातन देवी देवता धर्म के। फिर तुम पवित्र नहीं हो इसलिए अपने को देवी देवता कह नहीं सकते हो। धर्म भ्रष्ट कर्म भ्रष्ट हो गये हो। आगे तुम्हारे कर्म अकर्म होते थे। रावण राज्य में कर्म विकर्म होते हैं। तुम जो बेहद के सालवेन्ट थे सो अब बेहद के इनसालवेन्ट बन गये हो। अब फिर बाप सालवेन्ट बनाते हैं तो तुमको कितनी खुशी होनी चाहिए। अनेक बार तुम विश्व के मालिक बने हो। अब कितना पट पर आ गये हो। एक्टरस हैं ना सब। मनुष्य ही एक्टर बनते हैं। एक्टर होकर और ड्रामा को न जाने तो इडियट ठहरे ना। सब इडियट ही हैं। बिलकुल बेसमझ हैं। अभी नालेज फुल बाप के तुम बच्चे भी नालेज फुल बन रहे हो। यह नालेज बहुतों को देनी है। नशा रहना चाहिए। हम नालेज पढ़ते ही हैं राजाओं का राजा बनने लिए। कम पढ़ने वालों को कम नशा रहता है। बाप कहते हैं तुमको इस पढ़ाई से हम विश्व के मालिक बनाये रहे हैं। पढ़ाई में कैरेक्टर अच्छा चाहिए। ब्रह्मचर्य से ही पढ़ाई होती है। कहां वह पाई पैसे की कमाई, कहां यह तो पदमपति बनना है। सब बच्चों को शान्तिधाम वा सुख धाम ले जाऊंगा। कोई भी साधु सन्त ऐसे कह न सके। सुख धाम को तो वह जानते ही नहीं। विलायत में भी जाकर भारत का सच्चा2 प्राचीन सहज राजयोग बताना है। गाड तो एक ही है। वह ही पतित पावन लिबरेटर है। गोल्डेन एज में सिर्फ डिटिज्म था। बाकि और सब धर्म मुक्तिधाम में थे। ऐसे2 तुम समझावेंगे तो वह समझेंगे बरोबर यह तो रियल योग जानते हैं। अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप व दादा का याद प्यार गुड मार्निंग। ओम।